Dr. REETU RAJ

Assistant Professor

Department of HISTORY

RAJA SINGH COLLEGE SIWAN

(Jai Prakash University Chapra)

Lecture Notes on **“_सूफी संप्रदाय I"Notes-2**

(for TDC Part 2 HISTORY HONOURS)

सूफी संप्रदाय।

भारत में सूफीमत

भारत में सूफी मत का आगमन 11वीं और 12वीं शताब्दी में माना जाता है। भारत में बसे श्रेष्ठ सूपिफयों में से एक थे कृ अल हुजवारी जिनका निध्न 1089 ई. में हो गया। उन्हें दाता गंजबख्श (असीमित खजाने वेफ वितरक) वेफ रूप में जाना जाता है। प्रारंभ में, सूपिफयों वेफ मुख्य वेफन्द्र मुल्तान व पंजाब थे। परंतु 13वीं व 14वीं सदी तक सूफी कश्मीर, बिहार, बंगाल एवं दक्षिण तक पैफल चुवेफ थे। यह उल्लेखनीय है कि भारत में आने से पूर्व ही सूफीवाद ने एक निश्चित रूप ले लिया था। उसवेफ मौलिक एवं नैतिक सिद्धांत, शिक्षण एवं आदेश प्रणाली, उपवास, प्रार्थना एवं खानकाह में रहने की परम्परा पहले से ही तय हो चुकी थी। सूफी अपनी इच्छा से अपफगानिस्तान वेफ

माध्यम से भारत आए थे। उनवेफ शुद्ध जीवन, भक्तिप्रेम व मानवता वेफ लिए सेवा जैसे विचारों ने उन्हें लोकप्रिय बना दिया तथा भारतीय समाज में उन्हें आदर सम्मान भी दिलवाया।

अबुल पफजल ने 'एआइने-ए-अकबरी' में सूपिफयों वेफ 14 सिलसिलों का उल्लेख किया है। बहरहाल, इस पाठ में हम वुफछ महत्त्वपूर्ण सिलसिलों का ही उल्लेख करेंगे। ये सिलसिले दो प्रकार वेफ थे बेशरा और बाशरा। बाशरा वेफ अन्तर्गत वे सिलसिले थे जो शरा (इस्लामी कानून) को मानते थे और नमाज, रोजा आदि नियमों का पालन करते थे। इनमें प्रमुख थे चिश्ती, सुहरावर्दी, पिफरदौसी, कादिरी व नख्शबंदी सिलसिले थे। बे-शरा सिलसिलों में शरीयत वेफ नियमों को नहीं मानते थे। कलन्दर, पिफरदौसी, सिलसिल इसी समूह से संबंप्रित थे।

चिश्ती सिलसिला

यह सिलसिला ख्वाजा चिश्ती (हेरात वेफ निकट) नामक गाँव में स्थापित किया गया था। भारत में चिश्ती सिलसिला ख्वाजा मुईनुद्दीन चिश्ती (जन्म 1142 ई) द्वारा स्थापित किया गया था, जो 1192 ई. में भारत आए थे। उन्होंने अजमेर को अपनी शिक्षाओं का मुख्य वेफन्द्र बनाया। उनका मानना था कि भक्ति का सबसे अच्छा तरीका मनुष्य की सेवा है और इसीलिए उन्होंने दलितों वेफ बीच काम किया। उनकी मृत्यु 1236 ई में अजमेर में हुई। मुगल काल वेफ दौरान अजमेर एक प्रमुख तीर्थ वेफन्द्र बन गया क्योंकि मुगल सम्राट नियमित रूप से शेखों की दरगाहों का दौरा किया करते थे। उनकी लोकप्रियता का अनुमान इसी बात से लगाया जा सकता है कि आज भी लाखों मुसलमान और हिन्दू अपनी इच्छा की पूर्ति वेफ लिए दरगाह का दौरा किया करते हैं। नागौर वेफ शेख हमीदुद्दीन और वुफतुबद्दीन बख्तियार काकी उनवेफ चेले थे। शेख हमीदुद्दीन एक गरीब किसान थे और उन्होंने इल्तुतमीश द्वारा गांवों वेफ दान लेने से इंकार कर दिया। वुफतुबद्दीन बख्तियार काकी की खानकाह का कई

क्षेत्रों वेफ लोगों ने दौरा किया। सुल्तान इल्तुतमीश ने वुफतुबमीनार को अजोध्न वेफ शेख पफरीदउद्दीन को सपर्पित किया। जिन्होंने चिश्ती सिलसिलों को आधुनिक हरियाणा और पंजाब में लोकप्रिय किया। उन्होंने सभी वेफ लिए प्यार एवं उदारता का दरवाजा खोला। बाबा पफरीद ;उन्हें इसी के नाम से जाना जाता थाद्ध का हिन्दुओं एवं मुसलमानों वेफ द्वारा सम्मान किया जाता था। पंजाबी में लिखे गए उनवेफ छन्दों को आदि ग्रंथ में उद्ध्त किया गया। बाबा पफरीद वेफ सबसे प्रसिद्ध शिष्य शेख निजामुद्दीन औलिया (1238-1325 ई.) ने दिल्ली को चिश्ती सिलसिले का महत्वपूर्ण वेफन्द्र बनाने का उत्तरदायित्व सम्भाला। वह 1259 ईमें दिल्ली आये थे और दिल्ली में अपने 60 वर्षों वेफ दौरान उनहोंने 7 सुलतानों का शासन काल देखा उन्हें राज्य वेफ शासको और रईसों वेफ साथ से और राजकाज से दूर रहना पसंद था। उनवेफ लिए गरीबों को भोजन एवं कपड़ा वितरित करना ही त्याग था। उनवेफ अनुयायियों वेफ बीच विख्यात लेखक अमीर खुसरों भी थे। एक अन्य प्रसिद्ध चिश्ती संत शेख नसीरूद्दीन महमूद थे जो नसीरूद्दीन चिराग-ए-दिल्ली वेफ नाम से लोकप्रिय थे। उनकी मृत्यु

1356 ई में हुई और उत्तराधिकारियों वेफ अभाव वेफ कारण चिश्ती सिलसिले वेफ चेले पूर्वी और दक्षिणी भारत की ओर चले गए।

References: Internet & Competitive books.